

# ओह! मैं भी कोरोना पॉजिटिव

- मुरली मनोहर शर्मा

**डर, घबराहट व भय के अलावा बिना किसी लक्षणों के 10 सितम्बर को न जाने कैसे मैं पॉजिटिव से नेगेटिव हो गया और सुरक्षित बनाम असुरक्षित कैद से डिस्चार्ज किया गया लेकिन कोरोना के साथ का यह सफर बहुत से सवाल भी दिमाग में छोड़ गया।**

एक अनजान व खतरनाक नए वायरस का वैश्विक आतंक मार्च 2020 से बना आ रहा है। एक ऐसा वायरस जिसके प्रभाव में आपका पॉजिटिव आना कतई अच्छा नहीं है, जो किसी से, बिना दस्तक दिए, कब और कहाँ से, आपसे जुड़ जाए और जल्दी ही पता भी ना चले और सिर्फ आपसे ही भला क्यों? ना जाने कितनों के पास अपनी उपस्थिति दर्ज कराता हुआ निकल जाए, सोचकर शरीर में सिहरन सी दौड़ जाती हैं। मेरे और मेरे ही क्यों? ना जाने कितनों के जेहन में इसकी भयावहता और बढ़ जाती है जब रोज़ इसके द्वारा शिकार किए गए लोगों की संख्या का जागरूक और सजग मीडिया से पता चलता है। अब तो दुनिया के हरेक कोने में बस इसकी ही चर्चा और अब तो सभी की जुबान पर इसका नाम सहज ही सुनने को मिल जाता है— कोरोना—कोरोना—कोरोना।

चारों तरफ अफरा—तफरी सी मची हुई है, कोई अपने कार्यस्थल से अपने घरों की ओर पैदल चले जा रहे हैं। कुछ देश इसको लाने का दोषारोपण एक—दूसरे पर मढ़ रहे हैं, आवाजाही को बैन किया जा रहा है, जहाँ—जहाँ इसने दस्तक दी, उस जगह को सील किया जा रहा है, कुछ लोग बिना जाने उपाय बताने के चक्कर में फँस रहे हैं, तो कुछ इससे बचने के उपाय ढूँढ़ रहे हैं, तो कुछ कह रहे हैं कि जब तक कोई वैक्सीन ना आए तब तक तो सावधानियाँ ही बचाव का माध्यम बन सकती है। इसके साथ ही यह भी सुनने में आया कि यह तो सबको एक—ना—एक—दिन होना ही है और जिसका इम्प्यूनिटी सिस्टम सही होगा वह इससे बच पाएगा। यदि इसके होने का पता चल जाए तो इससे बचा जा सकता है। शायद इसी सोच के चलते 01 सितम्बर 2020 को बाइमेर टीम की कोविड—19 की जाँच की गई। इसके दौरान



फोटो: गूगल

बहुत से ख्याल आने लगे कि जाँच में कोरोना आया तो क्या?, जाँच प्रक्रिया की सुनकर मन में एक अलग तरह की घबराहट शुरू होने लगी और साथ में यह भी कि जो होगा देखा जाएगा।

मन की घबराहट बढ़ गई जब 02 सितम्बर रात 8:30 बजे मेरी जाँच रिपोर्ट पॉजिटिव आई और तैयार होकर कोविड सेन्टर पर चलने को कहा। इसको लेकर स्कूल साथियों को भी चिंता होने लगी।

इस दौरान मुझे संबल देने से जुड़ी, फाउंडेशन साथियों की आने वाली फोन कॉल्स से भी जुड़ता रहा और दिमाग में बहुत से विचारों व सवालों (मुझे कुछ विशेष महसूस तो नहीं हो रहा, मेरी ही रिपोर्ट ऐसी क्यों? वहाँ कुछ नहीं होगा, जल्दी ही आता हूँ, डर व चिंता की कोई बात नहीं है, जाते हुए खाना तो, इनके साथ खा लूँ, पता नहीं, ये बाद में कब खाएँ, कैसी जगह होगी?, कितने दिन रखेंगे? वहाँ पर अन्य के साथ रहकर मामला ज्यादा बिगड़ गया तो?) की बराबर मची हुई उथल—पुथल को संभालने की कोशिश भी करता रहा।

परिवार पर इसका कोई असर ना पड़े, इसे ध्यान में रखते हुए, बिना किसी हाव – भावों को प्रदर्शित किए अपने आप को शांत रखने के बावजूद भी मेरी कोशिश बेकार होती सी दिखी जब ये रूआंसे होने लगे व मुझे ही खिलाने के प्रयास में लगे रहे व कहते रहे की, हम तो बाद में भी खा लेंगे और सही में, मैं भी तो ठीक से नहीं खा पा रहा था।

अंततः घर व घर के आस-पास भय फैलने से रोकने की दिशा में सोचते हुए, एम्बुलेंस में दूर से ही बैठने का फैसला कर, मन में वही एक चिर-परिचित अलग तरह की घबराहट लिए चल पड़ा, मैं और मेरे साथ कोरोना।

इस तरह से जाने का यह मेरा पहला अनुभव था और फिर चलते हुए दो साथियों को भी रास्ते से बिठाया गया और लगभग 10 बजे हमको उतरलाई रोड़ पर बने आई.टी.आई. आवासीय भवन में छोड़ा गया। इस भवन में बने दो अपार्टमेंट में से एक की तरफ जाने को हुआ तो यहाँ पर एक व्यक्ति से मैंने पूछा कि, किस कमरे में जाना है? और यह सवाल अक्सर मैं जब भी कभी घर से बाहर कहीं जाकर रुकता हूँ, तो पूछता हूँ। उसने अनपेक्षित जवाब देते हुए कहा कि – किसी भी कमरे में चले जाओ और हाँ! अपना कैम्पर भी लेते जाओ। पीछे से दरवाजा बंद होने की आवाज से मेरा ध्यान टूटा और मैंने अपने आप से कहा कि— मैं कहीं, किसी होटल या धर्मशाला में नहीं आया हूँ। उदास मन से अपने कमरे की तरफ चल पड़ा और तभी पहले से रह रहे कुछ साथियों ने मुझे घेरकर पूछा कि आप कहाँ से? कौन हो? कोई तकलीफ तो नहीं? अभी तक तो कुछ नहीं— मैंने कहा और एक कमरे में सामान रखकर टॉयलेट, बाथरूम व आस-पास देखा तो, वहाँ की सफाई देखकर तो अधिक चिंता होने लगी कि, यहां ठीक होने की बजाय बीमार होने की ज्यादा संभावनाएँ दिख रही हैं। कोरोना के प्रति सुरक्षा को देखते हुए जिस तरह से मेरे जैसे बहुत से साथियों को यहाँ रखा जा रहा है और सफाई के नाम पर कुछ भी तो नहीं जबकि इसमें तो सफाई को प्राथमिकता में होनी चाहिए। अपने साथियों को भी अपनी चिंताएं बताई तो विचार आया कि वहां पर सफाई को लेकर कुछ होता है तो ठीक है, नहीं तो हम सामान उपलब्ध करवा देंगे। मैंने सोचा कि, अभी रात तो गुजारें, सुबह इसको लेकर बात करेंगे, शायद कुछ हल निकल जाएगा। दूसरे दिन की कोशिश के बाद दोपहर तक सब कुछ साफ हो गया था कि यहाँ पर सफाई की हद मेरे पीछे

से बंद होने वाले दरवाजे तक ही है। जो कुछ करना होगा, खुद को ही करना होगा। यहाँ पर रह रहे साथियों से पता चला कि अब पीने के पानी, चाय, नाश्ते और खाने की व्यवस्था ठीक होने लगी है, जो लगभग ठीक भी थी। इधर फाउंडेशन के साथियों ने भी इसको लेकर विचार किया कि यदि व्यवस्था ठीक नहीं होती है तो अपने ऑफिस में भी रखने पर बात की जा सकती है या फिर किसी होटल में भी ठहराया जा सकता है, इसको लेकर बात करेंगे। लेकिन होटल में रुकने पर पूरे होटल को सील करने और ऑफिस में रहने पर समय-समय पर मिलने वाली उचित देखभाल से वंचित रहने को देखते हुए यहीं पर रुकना ठीक समझा गया।

साथियों ने इस दौरान मेरा मनोबल बढ़ाने के साथ-साथ खाने-पीने की आवश्यक चीजें एवं सफाई के लिए जरूरी सामान पहुँचाकर मेरे स्वास्थ्य का भी बहुत ही ख्याल किया। घर पर जरूरी मदद के साथ-साथ घर के सदस्यों का भी कोरोना टैस्ट करवाया। इस पर मुझे अपने आप से कहीं ज्यादा परिवार में कोरोना होने का भय लग रहा था और खासकर बच्चों को लेकर बहुत ही चिंतित था, लेकिन यह जाँच करवाना भी तो अब, निहायत ही जरूरी हो गया था। तब जाकर सुकून मिला, जब घर के सदस्यों की रिपोर्ट ठीक आई।

स्कूल के साथी भी हर रोज बातचीत, गीत – कविताओं का अनौपचारिक सत्र रखकर संबल देने, नाश्ते, खाने-पीने एवं दवाएँ लेने के बारे में जानकारी लेते और रोज सुबह जल्दी उठने, छत पर टहलने, व्यायाम व प्राणायाम करने की सलाह देते और मुझे देर से उठने की आदत को छोड़कर जल्दी उठकर मॉर्निंग वॉक करने के लिए प्रेरित करते।

इस दौरान फोन कॉल के अलावा कहानियां पढ़ना व वीडियो देखना जारी रहा और साथ ही सुबह जल्दी छत पर टहलना, व्यायाम व प्राणायाम करना भी।

इस सबके बीच सरकार द्वारा घर पर चिपकाए गए सुरक्षा निर्देशों के बाद आस-पास बदल गए माहौल की भी जानकारी घर से मिलती रही कि कोई भी यहां से गुजरता तो पर्चे को पढ़कर अपना मुंह ढंकने लगा है। मकान मालिक को छोड़कर अन्य सदस्य डरे हुए हैं, जो औरतें और बच्चे खुले मुँह गुजरती थी वे मुँह ढककर जाती हैं

और देखने का अंदाज ही बदल गया है। खैर कोई नहीं सुरक्षा जरूरी है लेकिन इसके साथ जागरूकता भी।

7 सितम्बर को एक बार फिर मैं डर गया जब मुझे बुलाकर कहा कि – ‘आप ही का नाम मुरली मनोहर है।’ मैंने कहा – हाँ! बात क्या है? ‘आपको एमरजेंसी वार्ड में चलना है’ – दूसरी तरफ से कहा गया। अपनी घबराहट को संभालते हुए मैंने फिर से कहा कि – आप नाम जाँच लो। तीन बार से नहीं मानने पर मैंने फिर से कहा। आखिरकार साँस में साँस आई जब मुझसे कहा कि हमसे गलती हो गई। आप नहीं वो तो कोई और है।

अभी समय थोड़ा ठीक ही चल रहा था और कोरोना के प्रति मैं अपने आप को सहज महसूस करने ही लगा था कि तभी 8 सितम्बर को आई पॉजिटिव रिपोर्ट ने फिर से चिंता बढ़ा दी और मेरे व घरवालों के मन में डर गहरा हो गया जबकि मेरे साथ रह रहे 2 साथियों की नेगेटिव रिपोर्ट आई। फिर से जेहन में वही सवाल ‘मैं ही पॉजिटिव क्यों?’

इस बढ़ी हुई चिंता को कम करने के लिए साथियों ने डॉक्टर से भी बात करने को कहा। तत्पश्चात डॉक्टर से हुई बातचीत से राहत की साँस तब आई जब इन्होंने कहा कि पॉजिटिव रिपोर्ट आना अन्य किसी कारण से भी हो सकता है। 8-10 दिन के बाद तो घबराने की बात नहीं है एवं वायरस का प्रभाव भी कम हो जाता है। साथ ही हम आपको नहीं बता पाए। एक पर्याप्त समय के बाद अक्सर कोई लक्षण नजर नहीं आने पर हम डिस्चार्ज कर देते हैं। साथ ही हम आपकी 2 दिन बाद फिर से जाँच करेंगे।

डर, घबराहट व भय के अलावा बिना किसी लक्षणों के 10 सितम्बर को न जाने कैसे मैं पॉजिटिव से नेगेटिव हो गया और सुरक्षित बनाम असुरक्षित कैद से डिस्चार्ज किया गया लेकिन कोरोना के साथ का यह सफर बहुत से सवाल भी दिमाग में छोड़ गया और अब तो लगता है कि जब तक वैक्सीन ना आ जाएगी तब तक इसके साथ ही जीना व इसका आना-जाना लगा रहेगा।

(लेखक अजीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर से जुड़े हैं)

# शिशु

- नरेश सक्सेना

शिशु लोरी के शब्द नहीं  
संगीत समझता है  
बाद में सीखेगा भाषा  
अभी वह अर्थ समझता है

समझता है सबकी मुस्कान  
सभी के अल्ले ले ले ले  
तुम्हारे वेद पुराण कुरान  
अभी वह व्यर्थ समझता है  
अभी वह अर्थ समझता है

समझने में उसको, तुम हो  
कितने असमर्थ, समझता है  
बाद में सीखेगा भाषा  
उसी से है, जो है आशा।

मुद्रक तथा प्रकाशक प्रदीप चन्द्र डिमरी द्वारा अजीम प्रेमजी फाउंडेशन फॉर डेवलपमेंट, खसरा नम्बर 360 (ख), आमवाला तरला, देहरादून-248001 उत्तराखण्ड की ओर से प्रकाशित एवं शब्द संस्कृति प्रकाशन प्रा.लि., 117 चुक्खूवाला, देहरादून, उत्तराखण्ड द्वारा मुद्रित।  
सम्पादक : कैलाश चन्द्र काण्डपाल